पंकज तिवारी/www.indiatodayimages.com

पन्ना टाइगर रिजर्व में बाघों की ट्रैकिंग करने वाली टीम; और आराम फरमाता एक बाघ (इनसेट)

देसी नुस्खे से बढ़ी संख्या

साल 2009 में पन्ना में बाघ लगभग खत्म हो गए थे, लेकिन देसी तरकीब से अब उनकी संख्या 22 हो गई है

■ लेमुअल लाल

यह तरकीब भले ही अजीब लगे, लेकिन मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व के कर्मचारियों ने बाघों की तादाद बढ़ाने का जो नायाब तरीका निकाला है, उस पर वे गर्व कर सकते हैं. यहां शिकार की वजह से बाघों की संख्या 2009 के शुरू में नगण्य हो चुकी थी. लेकिन कर्मचारियों ने इस स्थिति से घबराने की बजाए इसका देसी समाधान निकालने का फैसला किया. इस राष्ट्रीय पशु के मूत्र पर आधारित तरकीब से महज तीन साल में यहां उनकी संख्या 22 तक पहुंच गई है, जिनमें सात वयस्क बाघ शामिल हैं. इस बढ़ती संख्या की वजह से पन्ना और छत्तरपुर जिलों में फैला 542 वर्ग किमी जंगल का दायरा भी उनके लिए छोटा पड़ता जा रहा है.

हाल यह हुआ कि संख्या बढ़ने की वजह से एक किशोर उम्र बाघ अपना इलाका बनाने के लिए अकसर पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश में भागने लगा. इसलिए उसे पकड़कर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में भेजना पड़ा.

बाघों की संख्या बढ़ाने के लिए विकसित की गई इस तरकीब की कहानी कम दिलचस्प नहीं है. इस मकसद से मार्च, 2009 में दो बाघिनों को—एक बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व से और एक कान्हा टाइगर रिजर्व से—पन्ना में भेजा गया. इसके बाद 6 नवंबर, 2009 को पेंच टाइगर रिजर्व से एक बाघ लाया गया ताकि उन दो बाघिनों से संसर्ग करवाकर बाघों की संख्या बढ़ाई जा सके. बाघ को रेडियो कॉलर लगाया गया और नौ दिन के बाद पन्ना में छोड़ दिया गया. लेकिन वह 10 दिन बाद पीटीआर की सीमा से निकलकर वापस पेंच टाइगर रिजर्व भाग गया. तब अधिकारियों को लगा कि उनकी संख्या बढ़ाने के उनके कार्यक्रम पर पानी फिर गया है, क्योंकि बाघिनों से सहवास के बिना उनकी संख्या कैसे बढ़ सकती थी.

इस बाघ को टी-3 नाम दिया गया था. इसे बड़ी मेहनत के बाद 25 दिसंबर, 2009 को दमोह जिले में तेजगढ़ के जंगल से पकड़ा गया. फील्ड डायरेक्टर समेत 70 से ज्यादा वन अधिकारी चार हाथियों के साथ उसकी खोज में लगे हुए थे. अब अधिकारी यह सोचने लगे कि उसे किस तरह दोबारा भागने से रोका जाए. तभी कुछ कर्मचारियों ने एक अनोखी जुगत निकाली. उन्होंने बाघिन के मूत्र को उस इलाके में छिड़क दिया, जहां बाघ को छोड़ा जाना था. यह इलाका बांधवगढ़ से लाई गई बाघिन के इलाके तक था जिसे टी-1 नाम दिया गया था. दिसंबर, 2009 को बाघ को पन्ना में छोड़ दिया गया. वह मूत्र की गंध को सूंघते हुए बाघिन के पास पहुंच गया और दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो गए. चार दिन बाद टी-3 बाघ और टी-1 बाघिन को साथ-साथ घूमते देखा गया. 16 या 17 अप्रैल को टी-1 ने चार शावकों को जन्म दिया, जिनमें से दो ही बच पाए. फरवरी, 2012 में चार शावक पैदा हुए लेकिन बाघिन ने एक शावक को छोड़ दिया.

टी-3 बाघ ने अपना संबंध सिर्फ टी-1 तक ही सीमित नहीं रखा, उसने कान्हा से लाई गई टी-2 नामक दूसरी बाघिन से भी रिश्ता बनाया. उसने भी अक्तूबर, 2010 में चार शावकों को जन्म दिया. उसने अप्रैल, 2012 और जुलाई, 2013 में भी तीन-तीन शावकों को जन्म दिया.

"बाघों के पुनर्वास कार्यक्रम में इतने कम समय में इतना अधिक सफल होने वाला, पन्ना दुनिया का पहला टाइगर रिजर्व है.''

रंगैया श्रीनिवास मूर्ति
फील्ड डायरेक्टर, पन्ना टाइगर रिजर्व

पन्ना के वन्य इतिहास में तब एक और अध्याय जुड़ा, जब 27 मार्च, 2011 को एक तीसरी बाघिन को पन्ना में लाया गया. टी-4 नाम की इस बाघिन को टी-3 बाघ के करीब लाने के लिए कर्मचारियों ने फिर वही तरीका अपनाया. उन्होंने बाघिन के मूत्र को घास-फूस पर छिड़क दिया. 1 अप्रैल, 2011 को टी-4 टी-3 के करीब आ गई. दोनों मई के अंत में जब जोड़ा बनाकर घूम रहे थे तो टी-3 ने एक नीलगाय का शिकार किया. टी-4 ने भी उसकी नकल करनी शुरू कर दी और अगले 10 दिन में उसने पांच जानवरों का शिकार किया. इस तरह टी-4 ने जल्द ही जंगल में जीवित रहने का गुर सीख लिया. उसने नवंबर, 2011 में दो और जुलाई, 2013 में तीन शावकों को जन्म दिया. यहां टी-5 नाम की आखिरी बाघिन को नवंबर, 2011 में लाया गया था. अब टी-5 भी जंगल के नए माहौल में अच्छी तरह ढल गई है.

मैथुन मूर्तियों के लिए मशहूर खजुराहो के मंदिरों से करीब 25 किमी दूर स्थित यह मनोरम बाघ अभयारण्य दुनिया का पहला संरक्षित क्षेत्र है, जहां बाघों के पुनर्वास का कार्यक्रम इतने कम समय में इतना सफल रहा, जबकि विशेषज्ञ कहते थे कि पन्ना में बाघों की संख्या 15 से अधिक होने में कम-से-कम 10 साल लग जाएंगे. इस सफलता से प्रभावित होकर चीन अपनी एक टीम यहां अध्ययन के लिए भेज रहा है.

बाघों की संख्या बढ़ने के बारे में पन्ना के फील्ड डायरेक्टर रंगैया श्रीनिवास मूर्ति कहते हैं, ''हमने कुछ टीमें बना रखी हैं जो रात-दिन बाघों पर नजर रखती हैं. रेडियो कॉलर लगे होने की वजह से हमें उनकी नब्ज तक की जानकारी होती है. यहां हमने एक गुप्तचर इकाई भी बनाई है, जिसकी जानकारियां काफी मददगार साबित हो रही हैं. हम दोषी कर्मचारियों को भी नहीं बख्शते. शिकारियों की मदद करने वाले एक कर्मचारी को हमने जेल भी पहुंचा दिया.'' वे बताते हैं कि कृत्रिम तरीके से पाली गई दो बाघिनों के प्राकृतिक विकास में सफल होने वाला यह दुनिया का पहला रिजर्व है. उनमें से एक बाघिन ने दो शावकों को भी जन्म दिया है.

पन्ना के पास गर्व करने के लिए काफी उपलब्धियां हैं. लेकिन यहां के अधिकारियों की खुशी शायद अभी अधूरी है, क्योंकि यहां जन्मे 11 शावकों में से सिर्फ एक ही मादा है. पिछली जुलाई में पैदा हुए 6 शावकों के लिंग की जानकारी अभी उपलब्ध नहीं हो पाई है. बाघ इलाके के लिए आपस में खूनी लड़ाइयां लड़ने के लिए जाने-जानते हैं. पी-111 नामक एक वयस्क बाघ पहले ही पी-213 नाम की एक बाघिन के एक शावक को मार चुका है.

राज्य सरकार की जांच के मुताबिक, नर बाघों की संख्या बढ़ने से ही 2009 में पन्ना में बाघों की संख्या लगभग खत्म हो गई थी. जब नर बाघों की संख्या बढ़ती है तो वे दूसरों के इलाके में चले जाते हैं और फिर मारे जाते हैं. नर और मादा के बीच अंतर को कम करने के लिए पन्ना में एक और बाघिन को लाया जा रहा है. यहां नब्बे के दशक में 30 से भी ज्यादा बाघ थे. पन्ना अपने उसी गौरवशाली अतीत की ओर वापस लौटता दिखाई दे रहा है. ■

इंसानी प्रयासों से बाघों की जनसंख्या बढ़ाने में भारी सफलता पा चुका चीन भी पन्ना रिजर्व की सफलता से प्रभावित होकर अपनी एक टीम अध्ययन के लिए भेज रहा है

विधानसभा चुनाव

ताल ठोंकती छोटी पार्टियां

मध्य प्रदेश में 25 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव में एक बात तो साफ है कि मुख्य मुकाबला बीजेपी और कांग्रेस के बीच ही है. इन दोनों के अलावा प्रदेश की कुछ अन्य क्षेत्रीय पार्टियां जरूर ताल ठोंक रही हैं लेकिन कुछ सीटों को छोड़ दें तो वे बीजेपी और कांग्रेस को टक्कर देती नहीं दिख रहीं.

प्रदेश में चुनाव की घोषणा से पहले इन पार्टियों के नेताओं ने तीसरे मोर्चे की मौजूदगी के बड़े-बड़े दावे भी ठोंके थे लेकिन ऐसा कोई मोर्चा बन नहीं सका. जनता दल यूनाइटेड-जेडी (यू) और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी में जरूर तालमेल हुआ है. इसके तहत जेडी (यू) 22 और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी 65 सीटों पर चुनाव लड़ रही है.

उत्तर प्रदेश की सीमा से लगी सीटों पर समाजवादी पार्टी (सपा) और बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) का जनाधार जरूर है, लेकिन इन पार्टियों के पास ऐसा कोई चेहरा नहीं है जिसके बदौलत प्रदेश में अपना सिक्का जमा सकें. वैसे प्रदेश सपा अध्यक्ष गौरी यादव कहते हैं, ''सपा नेता मुलायम सिंह और अखिलेश यादव की छवि का फायदा पार्टी को यूपी से सटे जिलों में मिलेगा. हमारा प्रदर्शन बेहतर रहेगा.'' 2003 के चुनाव में सपा ने प्रदेश में 9 सीटें जीती थीं, लेकिन 2008 में उसे एक भी सीट नहीं मिली. इस बार भी पार्टी की नजर यूपी से सटे बुदेलखंड क्षेत्र की सीटों पर है. सपा राज्य में 166 सीटों पर अपनी किस्मत आजमा रही है.

बीएसपी ने इस बार प्रदेश की सभी 230 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे लेकिन नामांकन रद्द होने की वजह से उसके 228 उम्मीदवार अब मैदान में रह गए हैं. 2008 के पिछले विधानसभा चुनाव में बीएसपी का प्रदर्शन बेहतर रहा और सात सीटों (मुरैना, रामपुर बघेलन, सिरमौर, त्यौंथर, जौरा, ग्वालियर ग्रामीण और सेंवड़ा) पर उसने जीत दर्ज की थी, हालांकि उसके एक विधायक अब बीजेपी में शामिल हो गए हैं. बीएसपी ने इस बार भी यूपी से सटे विंध्य और चंबल क्षेत्र से उम्मीदें लगा रखी हैं. वहीं सीपीआइ(एम) नौ सीटों पर चुनाव लड़ रही है. ये पार्टियां प्रदेश का मुकाबला भले ही त्रिकोणीय न कर पाएं लेकिन कुछ सीटों पर बीजेपी-कांग्रेस की राह आसन नहीं, खासकर यूपी से सटे इलाकों में. —शुरैह नियाजी